ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(1): 454-456
www.allresearchjournal.com
Received: 23-11-2020
Accepted: 27-12-2021

डॉ॰ सोनी
बावन बीघा, रोड़ नं॰11
मुज़फ्फरपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ॰ सोनी
बावन बीघा, रोड़ नं॰11
मुज़फ्फरपुर, बिहार, भारत

दलित विमर्श का प्रसंग : 'हरिजनगाथा'

डॉ॰ सोनी

सारांश:
नागार्जुन अपने काव्य में पीढ़ी–दर पीढ़ी और सामाजिक अत्याचार सहन करने के लिए बाध्य दलित वर्ग के आर्थिक व सामाजिक उन्नयन के लिए आवाज उठाते हैं इन्होंने दलित एवं आदिवासियों पर सार्थक कविताएँ लिखी हैं, बिहार, उड़ीसा, बंगाल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और आंध्रप्रदेश के आदिवासी–जनजातियों के जीवन संघर्षों को गहराई के साथ चित्रित किया है। 'हरिजन–गाथा' शीर्षक लंबी कविता इनकी काव्यात्मक क्षमता तथा जनता की पक्षधर चेतना का ही विकास है। हरिजनों पर होने वाले दारूण अत्याचार की दृष्टि से ही नहीं सामाजिक विकास के अगले चरण की दृष्टि से भी यह कविता महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्दः दलित विमर्श, 'हरिजनगाथा', नागार्जुन, बेलछी गाँव

प्रस्तावनाः
नागार्जुन दलितों के मुक्ति–संघर्ष की यात्रा के एक जुझारू रचनात्मक हस्तक्षेप रहे हैं। इस हस्तक्षेपकारी यात्रा की एक महत्त्वपूर्ण रचनात्मक पड़ाव रही है उनकी कविता– 'हरिजन–गाथा'। यह कविता 1977 में बिहार की राजधानी पटना से मात्र चालीस बयालीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित बेलछी गाँव में हुए दलितों के क्रूर नरसंहार की आक्रोशमयी प्रतिक्रिया में लिखी गयी थी। इस नरसंहार में तेरह दलितों को जिन्दा जला दिया गया था और इस वीभत्स व अमानवीय घटना ने संपूर्ण राष्ट्रीय मानस और अंतर्राष्ट्रीय मीडिया को हिला दिया था। वैसे इस नरसंहार का राजनीतिक लाभ उठाने के लिए इंदिरा गांधी 1977 के आम चुनाव के सिलसिले में हाथी पर सवार होकर बेलछी गाँव गयी थी और अपना चुनावी अभियान शुरू किया था। लाश की राजनीति कांग्रेस के चरित्र को सामने लाती है। यह कविता एक ओर स्वतंत्र भारत में मौजूद सामंती समाज–संरचना, उसकी बर्बरता व उत्पीड़न को सामने लाता है और दूसरी ओर दलितों की पीड़ा और प्रतिशोध की चेतना को उजागर करती है। [1]
प्रसंगात् मोहनदास नैमिशराय की यह टिप्पणी ध्यातव्य है : ''1977 में पटना के बेलहरी गाँव में 14 दलितों को जिंदा आग में झोंका गया। आग से बाहर निकलने की जो भी कोशिश करता उसे गोली मार दी जाती। तब श्रीमती इंदिरा गाँधी हाथी पर चढ़कर बेलहरी के हरिजनों का दुख–दर्द सुनने गई थी। तभी से जनसंहारों का राजनीतिक लाभ उठाने के लिए चुनावी पार्टी के नेताओं की दौड़ प्रारंभ हो गई। जनकवि नागार्जुन की प्रसिद्ध कविता 'हरिजन गाथा' बेलहरी कांड के ही केन्द्र पर लिखी गई थी।''[2]
नैमिशराय ने जिस बेलहरी नामक गाँव का उल्लेख किया है वह वस्तुतः बेलछी है जहाँ 14 नहीं, 13 दलित जलाए गए थे।
कविता में एक कथा–प्रयोग है। इस कथा के अनुसार नरसंहार के कुछ समय बाद एक दलित स्त्री के गर्भ से एक बच्चा जन्म लेता है जिसके पिता की हत्या नरसंहार के दौरान हो चुकी है। एक पितृहीन बच्चा संसार में तो आ जाता है, पर उसके पालन–पोषण तथा निरापद भविष्य को लेकर गहरी चिन्ता गाँव के दलित–समाज में है। कविता में यह चिन्ता दो दलित बुजुर्गों की आपसी बातचीत के जरिए अभिव्यक्त हुई है –
''क्या करेगा भला आगे चलकर/रामजी के आसरे जी गया अगर/कौन–सी माटी गोड़ेगा। कौन–सा ढेला फोड़ेगा। मग्गह का यह बदनाम इलाका/जाने कैसा सलूक करेगा इस बालक से/पैदा हुआ बेचारा/भूमिहीन बँधुआ मजदूरों के घर में/जीवन गुजारेगा हैवान की तरह/भटकेगा जहाँ–तहाँ वन–मानुष जैसा/ अधपेटा रहेगा, अधनंगा डोलेगा।
इस नवजात शिशु के भविष्य को जानने के लिए एक रैदासी संत को बुलाया जाता है जो बच्चे की हस्तरेखाओं को पढ़कर यह भविष्यवाणी करता है कि इस बच्चे के हाथ में हथियारों के अनगिनत चिह्न हैं –

आड़ी–तिरछी रेखाओं में/हथियारों के ही निशान हैं। खुखरी है, बम है, असि भी है/गँड़ासा, भाला प्रधान है।''

इसलिए निश्चित रूप से यह पितृहीन बच्चा दलितों–शोषितों का नायक बनेगा और सर्वहारा की मुक्ति के लिए हथियारबंद संघर्ष के विकल्प का निर्माण करेगा–

दिल ने कहा– अरे यह बालक/निम्न वर्ग का नायक होगा/नयी ऋचाओं का निर्माता/नये वेद का गायक होगा/होगा कर्म–वचन का पक्का/फोटो इसके घर–घर होंगे। [3]

इस कविता में उन गर्भिणी स्त्रियों का वर्णन हुआ है जो उक्त दहन में अपने पतियों को खो चुकी है। उन्हें ऐसा अनुभव होता है कि गर्भस्थ भ्रूण आकुल–व्याकुल हे। [4] उनके पिता मारे जा चुके हैं। संभवतः यही कारण है कि वे भ्रूण बेचैन हैं। कवि की इस उद्‌भावना पर विश्वनाथ त्रिपाठी की यह टिप्पणी द्रष्टव्य है :

''ऐसी कल्पना शायद ही कहीं किसी अन्य कवि ने की हो कि अपने जनकों पर जो अत्याचार हो रहे थे उसकी पीड़ा से उनकी संतान–भ्रूण उद्वेलित होकर पेट में दौडने लगी.....। अभिमन्यू ने गर्भ में चक्रव्यूह में प्रवेश करने की विधि सीखी थी। हरिजन भ्रूणों ने अपने जनकों के जिंदा जलाए जाने की यातना सही।'' [5]

इस काव्याख्यान का नायक कोई सवर्ण या राज–पुरुष नहीं है, बल्कि दलित–समाज का एक व्यक्ति है। इस काव्यागत आख्यान का महत्त्वपूर्ण बिन्दु यह है कि इसमें किसी अलौकिक अवतारी चरित्र के द्वारा जुल्मियों के वध के स्थान पर परिवर्तनकारी दलित–समाज के संगठित सामूहिक संघर्ष का आह्‌वान है।

नागार्जुन मिथकीय व पौराणिक संदर्भों को साम्प्रदायिक या पुनरुत्थानवादी मानकर उससे अपने को अलग नहीं करते, बल्कि कविताओं में राजनीतिक–प्रयोजन के साथ पौराणिक कथा–आख्यनों का अद्‌भुत प्रयोग करते हैं। वे सांस्कृतिक धार्मिक बोध की मदद से यथार्थ पर चढ़े जटिलता को नोचकर फेंक देते हैं। मिथकीय और पौराणिक कथा–संदर्भों का कवितात्मक विन्यास कर उन्होंने कविता का एक नया वामपंथी सौंदर्यशास्त्र रचा है। जनमानस में रची–बसी धर्म की मिथ्या चेतना को किस तरह क्रांतिकारी–वैज्ञानिक चेतना में रूपांतरित कर समाज के संदर्भ में उपयोग किया जा सकता है–यह कला नागार्जुन की कविताओं में नयी पीढ़ी के रचनाकारों को सीखने की जरूरत है।

राजनीतिक चेतना को जगाने के लिए कविता में पौराणिक कथा का प्रयोग है और यह प्रयोगशीलता इस तथ्य को समझा देती है कि वर्ण–व्यवस्था मनुष्य–मनुष्य के बीच खतरनाक दूरी पैदा करनेवाली मनुष्य–विरोधी व्यवस्था है जिसके अंतर्गत जातिगत श्रेष्ठता–बोध के अन्माद में एक आदमी कैसे नृशंस तथा दानव बन जाता है–

''ऐसा तो कभी नहीं हुआ था कि,
एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं,
तेरह के तरह अभागे,
अकिंचन मनुपुत्र,
जिंदा झोंक दिये गये हों,
अग्नि के विकराल लपटों में,
साधन–संपन्न ऊँची जातियोंवाले,
सौ–सौ मनुपुत्रों द्वारा,
ऐसा तो कभी नहीं हुआ था।''

नामवर सिंह ने अपनी संपादित पुस्तक 'नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएँ'' की भूमिका में ठीक ही लिखा है –

संस्कृत काव्यशास्त्र में नौ रसों के अन्तर्गत वीभत्स की भी गणना की गयी है और खानापूरी के लिए थोड़ी–बहुत बीभत्स रस की रचनाएँ भी हुई हैं। किन्तु नागार्जुन पहले कवि हैं जिन्होंने सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ में बीभत्स को नयी शक्ति प्रदान की है। [6]

जिस बालक की चर्चा इस कविता में की गई है वह हादसे की छाया में उत्पन्न हुआ है। बिरादरी के लोग उसके भविष्य की चिंता करते हैं। [7]

बच्चे का नाम कलुआ है। एक व्यक्ति 'गुरू महाराज' से उसकी किस्मत जानने की बात करता है। [8] गुरू रैदासी परम्परा के संत है। उनका नाम गरीबदास है। [9] वे आकर उस वातावरण से बच्चे को दूर ले जाने की सलाह देते हैं, क्योंकि उन्हें आशंका है कि भूस्वामी उसे जीने नहीं देंगे–

आज भगाओ, अभी भगाओ,
तुम लागों को माह न घेरे,
होशियार इस शिशु के पीछे
लगा रहे हैं गीदड़ फेरे
बडे–बडे इन भूमिघरों का
यदि इसका कुछ पता चल गया,
दीन–हीन छोटे लोगों को
समझो फिर दुर्भाग्य छल गया। [10]

गरीबदास उस नवजात बच्चे को भविष्य की क्रंति का सूत्रधार बतलाते हैं। वे उसे अत्याचार मिटानेवाले दल के संघटक के रूप में देखते हैं [11] जो श्रमिकों के बीच रहकर इस्पाती व्यक्तित्व का अर्जन करेगा। [12] आततायी और अपराधी उसे भय से भागेंगे और वह अपना दल बनाकर 'जंगल में मंगल' मनाएगा –

अरे देखना इसके डर से,
थर–थर काँपेंगे हत्यारे,
चोर–उचक्के गुंडे–डाकू
सभी फिरेंगे मारे–मारे,
इसकी अपनी पार्टी होगी,
इसका अपना ही दल होगा,
अजी देखना, इसके लेखे
जंगल में ही मंगल होगा। [13]

बाबा कलुए में धरती के उद्धारक वराह अवतार के दर्शन करते है। [14] उन्होंने निम्न वर्ग के उस नायक में नव्य वेद के मन्त्रद्रष्टा का साक्षात्कार भी किया है। यह वस्तुतः एक दलित व्यक्ति के अभिनव ब्राह्मणत्व की उद्‌घोषणा है –

दिल ने कहा अरे यह बालक,
निम्न वर्ग का नायक होगा,
नई ऋचाओं का निर्माता,
नए वेद का गायक होगा। [15]

बाबा का कहना है कि कलुआ ''कर्म–वचन का पक्का'' [16] होगा जिसकी ''तदबीरों से शोषण की बुनियाद हिलेगी'' [17] तथा दलित स्त्रियाँ ऐसे 'बागी' 'अग्निपुत्रों' को जन्म देंगी जो 'विप्लव' के सूत्रधार बनेंगे[18] उनका वक्तव्य है कि अब दलितों की 'बस्ती' में जो भी बच्चे पैदा होंगे वे ''सबके सब सूरमा बनेंगे।'' [19]

इस तरह गरीबदास दलित–दहन की घटना के बाद आनेवाले प्रतिरोधात्मक बदलाव को रेखांकित करते हैं। भविष्य में अत्याचारजनित आक्रोश की परिणति बगावत के रूप में होगी, यह उनका स्पष्ट मन्तव्य है। वह विद्रोह हथियारबंद होगा।

अपने प्रति होनेवाले अत्याचारों का मुकाबला करने के लिए भविष्य में दलित अस्त्र–शस्त्र उठाएँगें, 'हरिजनगाथा' का यह संदेश महात्वपूर्ण है। नागार्जुन ने उस भावी संघर्ष को सही ढंग से भाँपा है। कविता के अंत में दलित वर्ग के बुद्धू के मन में 'हथियारों' के नाम उभरते हैं। इस प्रसंग से दलितों के आगामी प्रतिरोध का स्वरूप व्यंजित होता है –

बढ़ आया बुद्धू अपने छप्पर की तरफ
नाचते रहे लेकिन माथे के अंदर
गुरू महाराज के मुँह से निकले हुए,
हथियारों के नाम और आकार–प्रकार,
खुखरी, भाला, गंडासा, बम, तलवार ..... [20]

यह कविता हिंसा की अनिवार्यता को अमान्य नहीं करती है और इसके बाबा भाग्यलेख पर विचार करनेवाले पोंगापंथी ज्योतिष को दलितजन के हित में क्रांति से जोड़ देते हैं। इस संदर्भ में एक समीक्षक की यह टिप्पणी ध्यातव्य है : ''बाबा गरीबदास के रूप में नागार्जुन प्रेमचंद की 'रंगभूमि' के सूरदास के अहिंसक संघर्ष से आगे की बात करते हैं। वे बच्चे की हथेली में हथियारों के चिह्न देखकर आगामी जुझारु नेतृत्व की परिकल्पना ही नहीं करते, ज्योतिष के रूढ़िप्रवण अंधज्ञान को मानवीय नियति के बदलाव का साधन भी बना देते हैं।'' [21]

बाबा नवजात दलित शिशु को माँ के साथ झरिया जैसे किसी दूरस्थ औधोगिक क्षेत्र में भेज देने की सावधानी बरतने का परामर्श देते हैं। [22] वे यात्रा–व्यय देते हैं। दलितों पर उनकी इस निष्क्रमण के लिए राजी करने का भार लेता है। [23] तथा बुद्ध यथासमय उसकी देखदेख करने का आश्वासन देता है।

'हरिजन–गाथा' का आधार वर्त्तमान भारत का यथार्थवादी वृतांत है, किन्तु इसमें दलितों के भविष्य में झाँकने का प्रयास किया गया है। यहाँ न केवल दलितों की पीड़ा की अनुभूति, बल्कि उनकी अस्मिता की जागृति की चेष्टा मिलती है। यह उस दलित साहित्य से जुड़ी हुई रचना है जिसका आधार अनुभव है और जो जातीय दमन की पड़ताल करता है। इस साहित्य के वैशिष्ट्य को डॉ॰ माता प्रसाद ने यों निर्दिष्ट किया है : 'दलित साहित्य में आक्रोश या विद्रोह की भावना प्रमुख है, किंतु केवल आक्रोश या विद्रोह साहित्य है, ऐसा मानना पूरी तरह सच नहीं है। दलित साहित्य में जहाँ सामाजिक दर्द है, जातिवाद की पीड़ा है, शोषण तथा उत्पीड़न की कसक है, वहीं जाति उत्पीड़न तथा शोषण के कारणों की तलाश भी है।'' [24]

नागार्जुन का विवेच्य दलित काव्य इन बातों से आगे जाता है। इसमें दलितों के दलीय संगठन और नेतृत्व की परिकल्पना भी है। प्रभाकर माचवे ने लिखा है कि मनुष्यों पर होनेवाले अत्याचार कवि को क्षुब्ध करते हैं, किन्तु वास्तविकता यह है कि वे आक्रोश की अभिव्यक्ति[25] तक ही सीमित नहीं रहते हैं। पुराने समाज और ससार को विनष्ट करना उनका लक्ष्य है जिसके लिए वे सामुदायिक संगठन पर बल देते हैं: 'पिछली दुनिया वह है, जिसे वे नष्ट करना चाहते हैं। यह दुनिया वह है जिसे वे नये सिरे से संगठित और विकसित करना चाहते है।[26] दलित एकजुट होकर सगठित क्रांति करेंगे, 'हरिजनगाथा' का यह संदेश प्रतिरोध का नया व्याकरण प्रस्तुत करता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. सुभाषचन्द्र गुप्त, कविकर्मः पुनर्पाठ से गुजरते हुए पृष्ठ 118, प्रिय साहित्य सदन, प्रथम संस्करणः सन् 2014
2. मोहनदास नैमिशराय, 'भारतीय दलित आंदोलन का इतिहास' 4, पृ॰ 510, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा॰लि॰, दिल्ली, पहला संस्करण, सन् 2013 ई॰
3. सुभाषचन्द्र गुप्त, कविकर्मः पुनर्पाठ से गुजरते हुए पृष्ठ 119, प्रिय साहित्य सदन, प्रथम संस्करणः सन् 2014
4. 'हरिजन गाथा', 'नागार्जुन रचनावली', 2, पृ॰ 177
5. 'हंस', दिसम्बर 1998 ई॰, पृ॰ 21
6. सुभाषचन्द्र गुप्त, कविकर्मः पुनर्पाठ से गुजरते हुए पृष्ठ 119–120, प्रिय साहित्य सदन, प्रथम संस्करणः सन् 2014
7. ''पैदा हुआ है दस रोज पहले अपनी बिरादरी में क्या करेगा भला आगे चलकर? ''–'हरिजनगाथा,' 'नागार्जुन रचनावली, 2,पृ॰178
8. वहीं, पृ॰ 179
9. वहीं, पृ॰ 179
10. वहीं, पृ॰ 180–181
11. ''होगा यह भारी उत्पाती जुलुम मिटायेंगे धरती से इसके साथी और संधाती'' वहीं, पृ॰ 180
12. वहीं, पृ॰ 180
13. वहीं, पृ॰ 181
14. वहीं, पृ॰ 182
15. वहीं, पृ॰ 183
16. वहीं, पृ॰ 183
17. वहीं, पृ॰ 183
18. ''दिल ने कहा दलित माँओं के सब बच्चे अग बागी होंगे अग्निपुत्र होंगे वे अंतिम, विप्लव में सहभागी होंगे'' वहीं, पृ॰ 182
19. वहीं, पृ॰ 183
20. वहीं, पृ॰ 185
21. डॉ॰ प्रमोदकुमार सिंह 'छायावादोत्तर काव्यः पाठ और विमर्श, पृ॰129, प्रभास प्रकाशन मुजफ्फरपुर, द्वितीय संस्करण, सन् 2010 ई॰
22. 'हरिजनगाथा', रचनावली, 2, पृ॰ 180
23. ''मैं इत्ते में करता हूँ तैयार समझा–बुझाकर सुखिया और उसकी सास को ....'' वहीं, पृ॰ 181
24. डॉ॰ माताप्रसाद, 'आश्वस्त', नवम्बर 2006 ई॰ अंक–39, पृ॰ 05, संपादन : डॉ॰ तारा परमार।
25. डॉ॰, प्रभाकर माचवे, 'नागार्जुन' आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि–14, 14, पृ॰ 11.
26. डॉ॰ विजयबहादुर सिंह, 'आश्वस्त',नवम्बर 2006 ई॰, अंक–39, पृ॰05